Pro

Chapter 10

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

מִשְׁלֵי	שְׁלֹמֹה	פ	בֵּן	חָכָם	יְשַׂמַּח־	אָב	וּבֵן	כְּסִיל	תּוּגַת	אִמּוֹ׃
दृष्टान्त	शलोमो-के	।	पुत्र	बुद्धिमान	आनन्दित-करता-है	पिता-को	और-पुत्र	मूर्ख	शोक	माता-का-है
H4912	H8010			H2450	H8055	H0001		H3684	H8424	H0517

> एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्द देता है किन्तु एक मूर्ख पुत्र, माता का दुःख होता है।

2

לֹא־	יוֹעִילוּ	אוֹצְרוֹת	רֶשַׁע	וּצְדָקָה	תַּצִּיל	מִמָּוֶת׃
नहीं	लाभ-देते	खजाने	दुष्टता-के	और-धार्मिकता	बचाती-है	मृत्यु-से
H3808	H3276	H0214	H7562	H6666	H5337	H4194

> बुराई से कमाये हुए धन के कोष सदा व्यर्थ रहते हैं! जबकि धार्मिकता मौत से छुड़ाती है।

3

לֹא־	יַרְעִיב	יְהוָה	נֶפֶשׁ	צַדִּיק	וְהַוַּת	רְשָׁעִים	יֶהְדֹּף׃
नहीं	भूखा-रखेगा	यहोवा	प्राण-को	धर्मी-के	और-लालसा	दुष्टों-की	वह-ठुकराएगा
H3808	H7456	H3068	H5315	H6662	H1942	H7563	H1920

> किसी नेक जन को यहोवा भूखा नहीं रहने देगा, किन्तु दुष्ट की लालसा पर पानी फेर देता है।

4

רָאשׁ	עֹשֶׂה	כַף־	רְמִיָּה	וְיַד	חָרוּצִים	תַּעֲשִׁיר׃
निर्धन	करता-है	हाथ	धोखे-का	और-हाथ	परिश्रमियों-का	धनवान-बनाता-है
H7326		H3709		H3027		H6238

> सुस्त हाथ मनुष्य को दरिद्र कर देते हैं, किन्तु परिश्रमी हाथ सम्पत्ति लाते हैं।

5

אֹגֵר	בַּקַּיִץ	בֵּן	מַשְׂכִּיל	נִרְדָּם	בַּקָּצִיר	בֵּן	מֵבִישׁ׃
इकट्ठा-करता-है	गर्मी-में	पुत्र	समझदार	सोता-है	कटनी-में	पुत्र	लज्जाजनक
H0103	H7019			H7290			H0954

> गर्मियों में जो उपज को बटोर रखता है, वही पुत्र बुद्धिमान है; किन्तु जो कटनी के समय में सोता है वह पुत्र शर्मनाक होता है।

6

בְּרָכוֹת	לְרֹאשׁ	צַדִּיק	וּפִי	רְשָׁעִים	יְכַסֶּה	חָמָס׃
आशीषें	सिर-पर	धर्मी-के	और-मुँह	दुष्टों-का	ढाँकता-है	हिंसा-को
H1293		H6662	H6310	H7563	H3680	H2555

> धर्मी जनों के सिर आशीषों का मुकुट होता किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती।

7

זֵכֶר	צַדִּיק	לִבְרָכָה	וְשֵׁם	רְשָׁעִים	יִרְקָב׃
स्मरण	धर्मी-का	आशीष-के-लिए	और-नाम	दुष्टों-का	सड़ेगा
H2143	H6662	H1293	H8034	H7563	H7537

> धर्मी का वरदान स्मरण मात्र बन जाये; किन्तु दुष्ट का नाम दुर्गन्ध देगा।

8

חֲכַם־	לֵב	יִקַּח	מִצְוֺת	וֶאֱוִיל	שְׂפָתַיִם	יִלָּבֵט׃
बुद्धिमान	हृदय-का	ग्रहण-करता-है	आज्ञाओं-को	और-मूर्ख	होंठों-का	गिर-जाएगा
H2450		H3947	H4687	H0191	H8193	H3832

> वह आज्ञा मानेगा जिसका मन विवेकशील है, जबकि बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।

9

הוֹלֵךְ	בַּתֹּם	יֵלֶךְ	בֶּטַח	וּמְעַקֵּשׁ	דְּרָכָיו	יִוָּדֵעַ׃
चलनेवाला	खराई-में	चलता-है	सुरक्षित	और-टेढ़ा-करनेवाला	मार्गों-को	जाना-जाएगा
H1980	H8537	H3212	H0983	H6140	H1870	H3045

> विवेकशील व्यक्ति सुरक्षित रहता है, किन्तु टेढ़ी चाल वाले का भण्डा फूटेगा।

יִלָּבֵט׃	שְׂפָתַיִם	וֶאֱוִיל	עַצָּבֶת	יִתֵּן	עַיִן	קֹרֵץ	10
गिर-जाएगा	होंठों-का	और-मूर्ख	दुःख	देता-है	आँख-से	आँख-मारनेवाला	
H3832	H8193	H0191	H6094	H5414		H7169	

> जो बुरे इरादे से आँख से इशारा करे, उसको तो उससे दुःख ही मिलेगा। और बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।

חָמָס׃	יְכַסֶּה	רְשָׁעִים	וּפִי	צַדִּיק	פִּי	חַיִּים	מְקוֹר	11
हिंसा-को	ढाँकता-है	दुष्टों-का	और-मुँह	धर्मी-का	मुँह	जीवन-का	स्रोत	
H2555	H3680	H7563	H6310	H6662	H6310		H4726	

> धर्मी का मुख तो जीवन का स्रोत होता है, किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती है।

אַהֲבָה׃	תְּכַסֶּה	פְּשָׁעִים	כָּל־	וְעַל	מְדָנִים	תְּעוֹרֵר	שִׂנְאָה	12
प्रेम	ढाँकता-है	अपराधों-के	सब	और-ऊपर	झगड़ों-को	भड़काती-है	घृणा	
H0160	H3680	H6588	H3605		H4090	H5782	H8135	

> दुष्ट के मुख से घृणा भेद—भावों को उत्तेजित करती है जबकि प्रेम सब दोषों को ढक लेता है।

לֵב׃	חֲסַר־	לְגֵו	וְשֵׁבֶט	חָכְמָה	תִּמָּצֵא	נָבוֹן	בְּשִׂפְתֵי	13
हृदय-के	रहित	पीठ-के-लिए	और-छड़ी	बुद्धि	पाई-जाती-है	समझदार-के	होंठों-में	
	H2638		H7626	H2451	H4672	H0995	H8193	

> बुद्धि का निवास सदा समझदार होठों पर होता है, किन्तु जिसमें भले बुरे का बोध नहीं होता, उसके पीठ पर डंडा होता है।

קְרֹבָה׃	מְחִתָּה	אֱוִיל	וּפִי־	דָעַת	יִצְפְּנוּ־	חֲכָמִים	14
निकट-है	विनाश	मूर्ख-का	और-मुँह	ज्ञान-को	छिपाते-हैं	बुद्धिमान	
H7138	H4288	H0191	H6310	H1847	H6845	H2450	

> बुद्धिमान लोग, ज्ञान का संचय करते रहते, किन्तु मूर्ख की वाणी विपत्ति को बुलाती है।

רֵישָׁם׃	דַלִּים	מְחִתַּת	עֻזּוֹ	קִרְיַת	עָשִׁיר	הוֹן	15
निर्धनता-है	गरीबों-का	विनाश	बल-का-है	नगर	धनवान-का	धन	
	H1800	H4288	H5797	H7151	H6223	H1952	

> धनिक का धन, उनका मज़बूत किला होता, दीन की दीनता पर उसका विनाश है।

לְחַטָּאת׃	רָשָׁע	תְּבוּאַת	לְחַיִּים	צַדִּיק	פְּעֻלַּת	16
पाप-के-लिए	दुष्ट-की	आमदनी	जीवन-के-लिए	धर्मी-का	परिश्रम	
	H7563	H8393		H6662	H6468	

> नेक की कमाई, उन्हें जीवन देती है, किन्तु दुष्ट की आय दण्ड दिलवाती।

מַתְעֶה׃	תּוֹכַחַת	וְעוֹזֵב	מוּסָר	שׁוֹמֵר	לְחַיִּים	אֹרַח	17
भटकाता-है	डाँट-को	और-त्यागनेवाला	शिक्षा-को	रखनेवाला	जीवन-की-ओर	मार्ग	
H8582			H4148	H8104		H0734	

> ऐसे अनुशासन से जो जन सीखता है, जीवन के मार्ग की राह वह दिखाता है। किन्तु जो सुधार की उपेक्षा करता है ऐसा मनुष्य तो भटकाया करता है।

כְסִיל׃	הוּא	דִבָּה	וּמוֹצִא	שָׁקֶר	שִׂפְתֵי־	שִׂנְאָה	מְכַסֶּה	18
मूर्ख-है	वह	बदनामी-को	और-फैलानेवाला	झूठ-के	होंठों-से	घृणा-को	छिपानेवाला	
H3684	H1931	H1681	H3318	H8267	H8193	H8135	H3680	

> जो मनुष्य बैर पर परदा डाले रखता है, वह मिथ्यावादी है और वह जो निन्दा फैलाता है, मूढ़ है।

מַשְׂכִּיל׃	שְׂפָתָיו	וְחֹשֵׂךְ	פָּשַׁע	יֶחְדַּל־	לֹא	דְבָרִים	בְּרֹב	19
समझदार-है	होंठों-को	और-रोकनेवाला	अपराध	रुकता	नहीं	शब्दों-की	बहुतायत-में	
	H8193	H2820	H6588	H2308	H3808	H1697	H7230	

> अधिक बोलने से, कभी पाप नहीं दूर होता किन्तु जो अपनी जुबान को लगाम देता है, वही बुद्धिमान है।

20						
כֶּ֣סֶף	נִ֭בְחָר	לְשׁ֣וֹן	צַדִּ֑יק	לֵ֖ב	רְשָׁעִ֣ים	כִּמְעָֽט׃
चाँदी	चुनी-हुई	जीभ	धर्मी-की	हृदय	दुष्टों-का	थोड़ा-है
H3701	H0977	H3956	H6662		H7563	H4592

> धर्मी की वाणी विशुद्ध चाँदी है, किन्तु दुष्ट के हृदय का कोई नहीं मोल।

21							
שִׂפְתֵ֣י	צַ֭דִּיק	יִרְע֣וּ	רַבִּ֑ים	וֶ֝אֱוִילִ֗ים	בַּחֲסַר־	לֵ֥ב	יָמֽוּתוּ׃
होंठ	धर्मी-के	चराते-हैं	बहुतों-को	और-मूर्ख	अभाव-में	हृदय-के	मरते-हैं
H8193	H6662			H0191	H2638		H4191

> धर्मी के मुख से अनेक का भला होता, किन्तु मूर्ख समझ के अभाव में मिट जाते।

22							
בִּרְכַּ֣ת	יְ֭הוָה	הִ֣יא	תַעֲשִׁ֑יר	וְלֹֽא־	יוֹסִ֖ף	עֶ֣צֶב	עִמָּֽהּ׃
आशीष	यहोवा-की	वह	धनवान-बनाती-है	और-नहीं	जोड़ता	दुःख	उसके-साथ
H1293	H3068	H1931	H6238	H3808	H3254		

> यहोवा के वरदान से जो धन मिलता है, उसके साथ वह कोई दुःख नहीं जोड़ता।

23						
כִּשְׂח֣וֹק	לִ֭כְסִיל	עֲשׂ֣וֹת	זִמָּ֑ה	וְ֝חָכְמָ֗ה	לְאִ֣ישׁ	תְּבוּנָֽה׃
जैसे-हँसी	मूर्ख-के-लिए	करना	दुष्कर्म	वैसे-बुद्धि	पुरुष-के-लिए	समझ-वाले
H7814	H3684		H2154	H2451	H0376	H8394

> बुरे आचार में मूढ़ को सुख मिलता, किन्तु एक समझदार विवेक में सुख लेता है।

24						
מְגוֹרַ֣ת	רָ֭שָׁע	הִ֣יא	תְבוֹאֶ֑נּוּ	וְתַאֲוַ֖ת	צַדִּיקִ֣ים	יִתֵּֽן׃
भय	दुष्ट-का	वह	आएगा-उस-पर	और-इच्छा	धर्मियों-की	वह-देगा
H4034	H7563	H1931	H0935	H8378	H6662	H5414

> जिससे मूढ़ भयभीत होता, वही उस पर आ पड़ेगी, धर्मी की कामना तो पूरी की जायेगी।

25						
כַּעֲב֣וֹר	ס֭וּפָה	וְאֵ֣ין	רָשָׁ֑ע	וְ֝צַדִּ֗יק	יְס֣וֹד	עוֹלָֽם׃
गुजरने-पर	आँधी-के	और-नहीं	दुष्ट	और-धर्मी	नींव	सदा-की
		H0369	H7563	H6662	H3247	H5769

> आंधी जब गुज़रती है, दुष्ट उड़ जाते हैं, किन्तु धर्मी जन तो, निरन्तर टिके रहते हैं।

26						
כַּחֹ֤מֶץ׀	לַשִּׁנַּ֗יִם	וְכֶעָשָׁ֥ן	לָעֵינָ֑יִם	כֵּ֥ן	הֶ֝עָצֵ֗ל	לְשֹׁלְחָֽיו׃
जैसे-सिरका	दाँतों-के-लिए	और-जैसे-धुआँ	आँखों-के-लिए	वैसे	आलसी	भेजनेवालों-के-लिए
H2558	H8127	H6227			H6102	H7971

> काम पर जो किसी आलसी को भेजता है, वह बन जाता है जैसे अम्ल सिरका दाँतों को खटाता है, और धुंआ आँखों को तड़पाता दुःख देता है।

27						
יִרְאַ֣ת	יְ֭הוָה	תּוֹסִ֣יף	יָמִ֑ים	וּשְׁנ֖וֹת	רְשָׁעִ֣ים	תִּקְצֹֽרְנָה׃
भय	यहोवा-का	बढ़ाता-है	दिनों-को	और-वर्ष	दुष्टों-के	घटाए-जाएँगे
H3374	H3068	H3254	H3117	H8141	H7563	

> यहोवा का भय आयु का आयाम बढ़ाता है, किन्तु दुष्ट की आयु तो घटती रहती है।

28					
תּוֹחֶ֣לֶת	צַדִּיקִ֣ים	שִׂמְחָ֑ה	וְתִקְוַ֖ת	רְשָׁעִ֣ים	תֹּאבֵֽד׃
आशा	धर्मियों-की	आनन्द	और-आशा	दुष्टों-की	नष्ट-होगी
H8431	H6662	H8057		H7563	H0006

> धर्मी का भविष्य आनन्द—उल्लास है। किन्तु दुष्ट की आशा तो व्यर्थ रह जाती है।

29						
מָ֭עוֹז	לַתֹּ֣ם	דֶּ֣רֶךְ	יְהוָ֑ה	וּ֝מְחִתָּ֗ה	לְפֹ֣עֲלֵי	אָֽוֶן׃
दृढ़-स्थान	खरे-के-लिए	मार्ग	यहोवा-का	और-विनाश	करनेवालों-के-लिए	अधर्म
H4581	H8537	H1870	H3068	H4288	H6466	H0205

> धर्मी जन के लिये यहोवा का मार्ग शरण स्थल है किन्तु जो दुराचारी है, उनका यह विनाश है।

אָֽרֶץ׃	יִשְׁכְּנוּ־	לֹ֣א	וּ֝רְשָׁעִ֗ים	יִמּ֑וֹט	בַּל־	לְעוֹלָ֥ם	צַדִּ֣יק	30
देश–में	बसेंगे	नहीं	और–दुष्ट	डगमगाएगा	नहीं	सदा	धर्मी	
H0776	H7931	H3808	H7563	H4131	H1077	H5769	H6662	

> धर्मी जन को कभी उखाड़ा न जायेगा, किन्तु दुष्ट धरती पर टिक नहीं पायेगा।

תִּכָּרֵֽת׃	תַּ֝הְפֻּכ֗וֹת	וּלְשׁ֥וֹן	חָכְמָ֑ה	יָנ֣וּב	צַ֭דִּיק	פִּֽי־	31
काट–दी–जाएगी	टेढ़ापन–की	और–जीभ	बुद्धि–को	उपजाता–है	धर्मी–का	मुँह	
H3772	H8419	H3956	H2451	H5107	H6662	H6310	

> धर्मी के मुख से बुद्धि प्रवाहित होती है, किन्तु कुटिल जीभ को तो काट फेंका जायेगा।

תַּהְפֻּכֽוֹת׃	רְ֝שָׁעִ֗ים	וּפִ֥י	רָצ֑וֹן	יֵדְע֣וּן	צַ֭דִּיק	שִׂפְתֵ֣י	32
टेढ़ापन	दुष्टों–का	और–मुँह	प्रसन्नता–को	जानते–हैं	धर्मी–के	होंठ	
H8419	H7563	H6310	H7522	H3045	H6662	H8193	

> धर्मी के अधर जो उचित है जानते हैं, किन्तु दुष्ट का मुख बस कुटिल बातें बोलता।